''बाल साहित्यकार क्षमा शर्मा''

सुश्री. छाया शंकर माळी
शोधछात्रा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर. (महाराष्ट्र)

'बाल साहित्य' विधा हिंदी साहित्य में अपने पाँव जमा रही है। बाल साहित्य बच्चों के लिए लिखा जानेवाला साहित्य जिसका उद्देश्य मनोरंजन तो है ही परंतु बाल मनोविज्ञान के विविध अंगों को समझने का एक बहुत बड़ा प्रयास भी है। और यही कारण है कि आज बाल-साहित्य विधा हिंदी साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान निर्माण कर रही है। क्षमा शर्मा वरिष्ठ बालसाहित्यकारों में सशक्त साहित्यकार है, जिनकी बाल साहित्य पर अपनी एक अलग पकड़ भी है। बाल साहित्य विधा सशक्त और समृद्ध करने में क्षमा शर्मा का विशेष योगदान रहा है, ऐसा कहे तो गलत नहीं होगा।

क्षमा शर्मा का बालसाहित्य :

क्षमा शर्मा ने बाल साहित्य विधा के अंतर्गत अनेक बाल उपन्यास तथा बाल कहानियों का सृजन किया है। उनके साहित्य की अनेकविध विशेषता है जिसमें मनोरंजन, बालमनोविज्ञान, वैज्ञानिक दृष्टिकोन, राष्ट्रभावना, एकात्मकता आदि विशेषताओं से सराबोर उनका साहित्य बालकों को प्रेरित तथा जीवन जीने की कला भी सीखाता है। अब तक उनके पंद्रह बाल उपन्यास तथा चौदह बाल कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। मात्र मनोरंजन करना ही इस साहित्य का उद्देश्य नहीं है बल्कि बच्चों में राष्ट्रहीत की भावना जाग्रत करना, जीवन संघर्ष को सही रूप में निर्वासित करना यह महत्त्वपूर्ण उद्देश्य के साथ क्षमा जी ने अपना साहित्य निर्माण किया है। क्षमा शर्मा कहती है, ''किसी भी कहानी को लिखना अपने अतीत, अपने जीवन में बार-बार लौटना है। वहाँ से वे बिंदु चुनकर लाने है सुख के नहीं। जहाँ ढेर की ढेर त्रासदियाँ छिपी हुई है।''[१] इस प्रकार उनका साहित्य स्वयं की अनुभूति है। जो आंतरिक पीड़ा के साथ अभिव्यक्त हुई है।

क्षमा शर्मा और बालमनोविज्ञान :

बाल मनोविज्ञान के संदर्भ में डॉ. सुकृता अजमानी कहती है, ''बाल मनोविज्ञान का संबंध बालक की मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के विकास से है। इसलिए अब बाल मनोविज्ञान के साथ्य बाल विकास संज्ञा का भी प्रयोग हो रहा है।''[२] बाल मनोविज्ञान के इस महत्त्व को समझते हुए बाल मनोविज्ञान की सही पारखी क्षमा शर्मा ने अपने बाल साहित्य में बाल मन की हर परत को खोल रखा है। बाल मनोविज्ञान के कार्य के अंतर्गत बाल मन के सूक्षातिसूक्ष्म रहस्यों का उद्घाटन करना है। बालकों का मन चंचल प्रकृति का होता है वह आकाश की तरह निस्सीम और सागर की तरह अथाह होता है अत: बाल साहित्यकार को बालकों के लिए साहित्य सृजन बाल मनोविज्ञान के सामान्य तत्त्वों से भी परिचित हो यह आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी है। डॉ. क्षमा शर्मा बाल मनो विज्ञान की गहरी चितेरी रही है। बाल साहित्य के अंतर्गत बाल मन की सभी प्रवृत्तियों को उन्होंने यथास्थान

अभिव्यक्ति दी है। जिज्ञासा, रचनात्मक प्रवृत्ति, आत्म प्रदर्शन की प्रवृत्ति, द्वंद्व की प्रवृत्ति, अनुकरण की प्रवृत्ति, स्पर्धा, निर्देश की प्रवृत्ति, सहानुभूति, साहसिकता, सहिष्णुता की प्रवृत्ति, विनय की प्रवृत्ति, बालहठ, ईर्ष्या और कल्पनाशक्ति इस मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति के आधार पर बाल उपन्यास तथा बालकहानियों का सृजन किया है। 'भाईसाहब', 'दोस्त', 'तितली की खुशी', 'पप्पू चला ढूँढने शेर', 'पानी-पानी', 'एक रात जंगल में', 'होमवर्क' आदि बाल उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान का गहरा चित्रण हुआ है।

बाल साहित्य की प्रेरणास्त्रोत :

क्षमा शर्मा बालसाहित्य की अप्रतिम रचनाकार है। उनका बाल साहित्य बच्चों में हमेशा ही प्रिय रहा है, बालकों ने हमेशा उसे पसंद किया है। राष्ट्र नींव की ताकत उनके साहित्य में दिखाई देती है। जीवन अनुभूति की सच्ची तस्वीर उनके बाल साहित्य से झलकती है। नरेंद्र मोहन कहते हैं, ''रचनाकार जिस परिस्थिति और समय में जी रहा होता है वह परिस्थिति और समय किसी न किसी रूप में रचना में प्रतिबिंबित होता ही है। समकालीनता में इसलिए समयगत चेतना का बोध रहता है। और उसी में से नयी-नयी प्रवृत्तियाँ पैदा होती है। इन प्रवृत्तियों से साहित्यकार का सीधा और सच्चा लगाव रहता है। उन अंत:प्रेरणाओं और अंत:धाराओं से भी जो उनके पीछे छिपी है।''[३] क्षमा शर्मा की बाल साहित्य के प्रति गहरी रुचि के कारण अनेक प्रेरणा उनके बाल साहित्य के पीछे कार्यरत है। जैसे- दिव्यांग वर्ग के प्रति सहानुभूति, पठन संस्कृति से दूर जा रही पीढ़ी, खिलाड़ी वृत्ति, परिवेश, पशु प्रेम, बालकों के प्रति अनुराग, अभावग्रस्तता आदि अनेक प्रेरणा स्रोत के कारण क्षमा शर्मा ने बाल साहित्य की नींव मजबूत की है, जिसे बालकों ने बहुत ही पसंद भी किया है।

बच्चों की बदलती मानसिकता को ध्यान में रखते हुए बड़ा ही प्रासंगिक तथा सौद्देश्यपूर्ण रचनाओं का उन्होंने सृजन किया है। सर्जनात्मक बाल साहित्य बालक को मनोवैज्ञानिक दृष्टि देता है, इसलिए साहित्य में परिवर्तित दृष्टिकोन लाना जरूरी है। आज पठन संस्कृति से दूर जा रही पीढ़ी में पठन संस्कृति का अभाव दिखाई देता है। जिसकी चिंता करते हुए क्षमा शर्मा बालकेंद्रित साहित्य रचना कर आधुनिकता और पारंपरिक मूल्यों का समन्वय बाल साहित्य में लाना चाहती है। प्रवृत्ति के प्रति बालकों में अनुराग उत्पन्न करना चाहती है। जल, वृक्ष, फूल, पत्ते और झरने आदि अनेक प्राकृतिक अंगों का साहित्य में मानवीकरण कर बालकों को इनका महत्त्व बताना महत्त्वपूर्ण मानती है। क्षम शर्मा जानती है बच्चे को दूसरों के प्रति बड़ी दयाभावना होती है, दूसरों को मदद करने हेतु बालक तत्पर रहता है। इसलिए पशु-पक्षी तथा दिव्यांग वर्गके प्रति मन में आदर, प्रेम, करूणा, सहानुभूति और सहिष्णुता के भाव जगाने का प्रयास करती है। भूमंडलीकरण, औद्योगिकरण और वैश्वीकरण के कारण परिवर्तित हो रहा मानवी जीवन तथा भौगोलिक वातावरण का एहसास बच्चों में पर्यावरण का हो रहा ऱ्हास इसके प्रति संवेदना जगाकर कर्तव्य की जिम्मेदारी बालकों को समझाना चाहती है। आनेवाली पीढ़ी भविष्य में किन-किन समस्याओं से जूझ सकती है इसका संकेत उन्होंने बालसाहित्य में करा दिया है जो बहुत संवेदनशील, यथार्थवादी और मार्मिक है।

निष्कर्ष :

बाल साहित्यकार क्षमा शर्मा ने वरिष्ठ साहित्यकार के रूप में अपनी पहचान बनाई है। परिवर्तित बाल साहित्य दृष्टिकोन रखते हुए उन्होंने बाल साहित्य का सृजन किया है। जिसमें उन्होंने आनेवाली अनेक गंभीर समस्याओं का उद्घाटन बाल साहित्य के माध्यम से आनेवाली पीढ़ी के सामने कराया है। बाल मनोविज्ञान, मनोरंजन, राष्ट्रहित के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोन कितना आज के युग में महत्त्वपूर्ण है यह सिद्ध किया है। समाज में प्रचलित

अनेक रूढ़ि-परंपरा, रूढ़ि-मान्यताओं, अंधविश्वासों के प्रति सजग किया है। प्रकृति ही हमारी रक्षक है यह अनेक कहानियों के माध्यम से स्पष्ट किया है। जल समस्या, पर्यावरण क्षरण समस्या, औद्योगिकरण, भूमंडलीकरण जैसी समस्याओं से सचेत कर बालक के गुण विकसित करने का प्रयास क्षमा शर्मा ने किया है।

अत: बाल साहित्य विधा आज सिर्फ एक विधा या प्रवृत्ति के रूप में न रहकर हिंदी साहित्य के क्षेत्र में विकसित और प्रगतिशील समाज तथा पाठक के मन में अपना स्थान बुलंद कर रही है इसमें दोराय नहीं है।

-●●●●●-

संदर्भ –

१. क्षमा शर्मा – *लव स्टोरी, कहानी संग्रह (दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स : प्र. सं. १९९८), पृ. ७ भूमिका से*

२. डॉ. सकृता अजमानी, *प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान, (दिल्ली, पराग प्रकाशन, प्र. सं.१९९०), पृ.१६*

३. (सम्पा.) नरेंद्र मोहन, *समकालीन हिंदी कहानियाँ, (नई दिल्ली, भारतीय प्रकाशन संस्थान २४, अंसारी रोड, प्र.सं १९९४), पृ. १३*